कक्षा-12 पाठ-6

# सच्ची मित्रता

तैयारकर्ता व प्रस्तुतकर्ता

डॉ.सुनील बहल

## सप्रसंग व्याख्या

**कहाँ मित्रता,कैसी बातें ? अरे कल्पना है सब ये**
**सच्चा मित्र कहाँ मिलता है ? दु:खी हृदय की छाया सा**
**जिसे मित्रता समझ रहे हो, क्या वह शिष्टाचार नहीं ?**
**मुँह देखे की मीठी बातें, चिकनी-चुपड़ी ही सुन लो।**
**जिसे समझते हो तुम अपना मित्र भूल कर वही अभी**
**जब तुम हट जाते हो, तुमको पूरा मूर्ख बनाता है।**

शब्दार्थ : कल्पना- झूठा विचार। शिष्टाचार - दिखावे का सभ्य आचरण, छाया सा - सहारा भरा अर्थात सुखदायक ,चिकनी-चुपड़ी बातें - दिखावे की मीठी मीठी बातें।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता 'सच्ची मित्रता' से अवतरित किया गया है। इसमें प्रसाद जी ने मित्रता के संबंध में अपने जीवन के अनुभव सांझे किए हैं और कहा है कि सच्चा मित्र मिलना कठिन है ।

व्याख्या : मित्रता के सम्बन्ध में कवि कहते हैं कि मित्रता की बातें तो सभी करते हैं किंतु वास्तव में मित्रता कहाँ है ? अर्थात जीवन में मित्रता कहाँ मिलती है ? मित्रता की बातें करना तो आसान है पर उसे निभाना बहुत मुश्किल है। मित्रता केवल कल्पना ही लगती है क्योंकि वास्तव में सच्चा मित्र मिलना कठिन है। सच्चा मित्र तो दु:खी दिल को वैसे ही सुख देने वाला होता है जैसे (धूप में) छाया सुख देती है। अरे ! जिसे तुम मित्रता समझ बैठे हो , देखना कहीं वह

वह कोरा सभ्य व्यवहार अर्थात दिखावा तो नहीं ? कवि कहते हैं कि ऐसे दिखावटी सभ्य समाज में जिन्हें आप अपना मित्र समझते हो, वे आपके मुँह पर तो मीठी-मीठी बातें करते हैं, आपका सम्मान करते हैं किंतु जब आप उनके सामने नहीं होते तो वे आपकी पीठ के पीछे आपको मूर्ख बनाते हैं भाव आपके मुँह पर झूठी प्रशंसा करते हैं और मन में वैर विरोध रखकर दोहरे व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं ।

भावार्थ : सच्चा मित्र मिलना कठिन है ।

**क्षण भर में बने मित्रवर अंतरंग या सखा समान**
**प्रिय हो, 'प्रियवर' हो सब तुम हो, काम पड़े पर परिचित हो।**
**कहीं तुम्हारा 'स्वार्थ' लगा है, कही 'लोभ' है मित्र बना।**
**कहीं 'प्रतिष्ठा' कहीं 'रूप' है- मित्ररूप में रंगा हुआ**

शब्दार्थ : **अन्तरंग -** मन के करीब, जिगरी । **सखा -** मित्र **प्रतिष्ठा -** मान-सम्मान।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता 'सच्ची मित्रता' से अवतरित किया गया है। इसमें प्रसाद जी ने स्वार्थी मित्रों के बारे में बताया है कि किस प्रकार वे अपना स्वार्थ साधने के लिए मित्रता करते हैं।

व्याख्या : स्वार्थी मित्रों के बारे में पहचान करते हुए कवि कहते हैं कि जिस व्यक्ति को तुम मित्र मानने लगे हो, उसके व्यवहार को परख लेना चाहिए क्योंकि ऐसे स्वार्थी मित्र पल में तुम्हें अहसास कराएंगे कि वे तुम्हारे जिगरी दोस्त हैं और तुम्हारे मुँह पर तुम्हें कहेंगे कि तुम बहुत अच्छे हो या सबसे अच्छे हो किंतु तुम्हें खबर होनी चाहिए कि वे ऐसा केवल तुमसे अपना काम सिद्ध कराने के लिए कह रहे हैं।

कवि सावधान करते हुए कहते हैं कि हमें समझ रखनी चाहिए कि कहीं किसी मतलब को निकालने हेतु ,कही किसी लालच हेतु, कहीं तुम्हारी प्रतिष्ठा और कहीं तुम्हारी सुन्दरता के कारण कोई तुमसे मित्रता का रंग चढ़ाकर तुमसे मित्रता का नाटक कर रहा है। अत: ऐसे मित्र को सच्चा मित्र नहीं कहा जा सकता।

भावार्थ : आजकल के मित्र किसी मतलब,लालच , सुन्दरता या मान-सम्मान के कारण मित्र बनने का नाटक करते हैं।

**हृदय खोलकर मिलने वाले बड़े भाग्य से मिलते हैं।**
**मिल जाता है जिस प्राणी को सत्य-प्रेममय मित्र कहीं**
**निराधार भवसिन्धु बीच वह कर्णधार को पाता है**
**प्रेम-नाव खेकर जो उसको सचमुच पार लगाता है।**

शब्दार्थ : **प्रेममय -** प्यार से भरा। **भवसिन्धु -** संसार रूपी सागर। **कर्णधार -** मल्लाह । **प्रेम-नाव -** प्रेम रूपी नैया, किश्ती। **खेकर -** (किश्ती) चलाकर ।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता 'सच्ची मित्रता' से अवतरित किया गया है। इसमें प्रसाद जी ने सच्चे मित्र की प्रशंसा की है।

व्याख्या : कवि प्रसाद जी कहते हैं कि ऐसा मित्र सौभाग्य से मिलता है, जो दिल खोलकर मिले अर्थात दिल में किसी प्रकार का छल-कपट का भाव न रखे । यदि जीवन में कभी नि:स्वार्थी व प्यार से भरा व्यक्ति मित्र के रूप में मिल जाए तो समझो कि तुम्हें संसार रूपी समुद्र से पार लगाने वाला मल्लाह मिल गया है ।सचमुच, वह प्रेम

रूपी किश्ती को चलाकर तुम्हें पार लगा देता है अर्थात ऐसे मित्र को ही सच्चा मित्र कहा गया है।

भावार्थ : सच्चा मित्र बड़े सौभाग्य से मिलता है और ऐसा मित्र ही आपको हर कठिनता से पार लगा सकता है ।

## अभ्यास के प्रश्नोत्तर

**(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 40 शब्दों में लिखो :**

**प्रश्न 1. मित्रता व शिष्टाचार में प्रसाद जी ने क्या अन्तर बतलाया है ?**

उत्तर- मित्रता और शिष्टाचार में बड़ा अन्तर है। शिष्टाचार में व्यक्ति चिकनी-चुपड़ी अर मीठी-मीठी बातें करके मित्रता का दिखावा करता है। मुँह पर प्रशंसा करता है और पीठ पीछे मूर्ख बनाता है। शिष्टाचार में व्यक्ति मित्र का रूप धारण करके अपने मतलब को सिद्ध करने में लगा रहता है । सच्चा मित्र इसके विपरीत होता है । वह सुख और दुःख में साथ रहता है। ऐसा मित्र छल कपट न करके दिल खोलकर सच्चे मन से साथ निभाता है।

**प्रश्न 2. सच्ची मित्रता क्या है ? प्रस्तुत कविता के माध्यम से व्यक्त करें।**

उत्तर- सच्ची मित्रता में छल कपट नहीं होता । ऐसी मित्रता बड़े सौभाग्य से मिलती है । इसमें मन की संकीर्णता न होकर मन की विशालता होती है । जीवन में यदि कभी नि:स्वार्थी व प्यार से भरा व्यक्ति जिसे मित्र के रूप में मिल जाए तो समझना चाहिए कि उसे

संसार रूपी समुद्र से पार लगाने वाला मल्लाह मिल गया है । ऐसे मित्र के व्यवहार में कोई लोभ या स्वार्थ नहीं होता।

## याचना

**जब प्रलय का हो समय, ज्वालामुखी निज मुख खोल दे,**
**सागर उमड़ता आ रहा हो , शक्ति-साहस बोल दे ,**
**ग्रह गण सभी हों केंद्रच्युत, लड़कर परस्पर भग्न हों,**
**इस समय भी हम हे प्रभो ! तब पद्म-पद में लग्न हों।**

शब्दार्थ : **प्रलय-** विनाश । **ज्वालामुखी-** आग की लपटों के मुख वाला पर्वत । **केन्द्रच्युत-** अपने अपने स्थान से हटे हुए। **निज-** अपना । **परस्पर**-आपस में । **भग्न-** टूटे हुए। **पद्म -** कमल, **पद -** पांव, **पद्म-पद** से भाव है चरण रूपी कमल।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता 'याचना' में से अवतरित किया गया है। यहाँ कवि प्रार्थना करता है कि विकट परिस्थितियों में भी हमारी ईश्वर में आस्था बनी रहनी चाहिए।

व्याख्या : कवि ईश्वर से याचना करता हुआ कहता है कि जब संसार में विनाश की घड़ी आ जाये और ज्वालामुखी भी चाहे फूट पड़े, समुद्र भी अपनी मर्यादा लांघकर समस्त पृथ्वी को डुबोने पर उतर आए, सभी नक्षत्र अपने-अपने स्थान को छोड़कर आपस में टकराते हुए टूट जायें- तब भी हे ईश्वर ! हम आपके कमल रूपी चरणों मे लीन रहें।

भावार्थ : जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वर के प्रति निष्ठावान होना चाहिए।

**विशेष :** क. 'ग्रह गण' में अनुप्रास तथा 'पद्म-पद' में रूपक अलंकार है।
ख.संस्कृतनिष्ठ हिंदी भाषा का प्रयोग किया गया है।
ग.कवि का दृष्टिकोण आशावादी है।।
घ.शब्द चयन उपयुक्त एवं भावों के अनुकूल है।
ङ शांत रस

**जब शैल के सब श्रृंग विद्युद्- वृन्द के आघात से**

**हों गिर रहे भीषण मचाते विश्व में व्याघात से,**

**जब घिर रहे हों प्रलय-घन अवकाश-गत आकाश में,**

**तब भी प्रभो! यह मन खिंचे तव प्रेम-धारा-पाश में।**

शब्दार्थ : शैल- पर्वत । **श्रृंग** -चोटियाँ । **विद्युत-वृन्द**-बिजलियों के समूह। **आघात-** प्रहार, चोट। **भीषण-** भयंकर। **प्रलय घन**-विनाश रूपी बादल। **अवकाश-गत** = खाली। **प्रेम-धारा-पाश** = प्रेम धारा के बंधन में।

**प्रसंग :** प्रस्तुत अवतरण प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता 'याचना' में से अवतरित किया गया है। यहाँ कवि प्रार्थना करता है कि विकट परिस्थितियों में भी हमारी ईश्वर में आस्था बनी रहे।

**व्याख्या :** कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि जब पर्वत की सब चोटियाँ बिजलियों के समूह के प्रहार से गिर रही हों और संसार में भयंकर रुकावटें आ रही हों, जब खाली आकाश में विनाशकारी बादल घिर रहे हों। तब भी हे ईश्वर ! यह मन तुम्हारे प्रेम-धारा रूपी बंधन की ओर खिंचा चला जाये।

**भावार्थ :** जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वर के प्रति निष्ठावान होना चाहिए ।

**विशेष :** क. कवि का दृष्टिकोण आशावादी है।

ख संस्कृतनिष्ठ हिंदी भाषा का प्रयोग किया गया है।

ग. शब्द चयन उचित एवं भावों के अनुकूल है।

घ. अलंकार-अनुप्रास । रस-शान्त है।

**जब छोड़कर प्रेमी तथा सन्मित्र सब संसार में,**
**इस घाव पर छिड़कें नमक, हो दुःख खड़ा आकार में,**
**करुणानिधे। हों दुःख सागर में कि हम आनन्द में,**
**मन-मधुप हो विश्वस्त-प्रमुदित तब चरण-अरविन्द में।**

**शब्दार्थ :** सन्मित्र- अच्छे व सच्चे मित्र। करुणानिधे-करुणा के सागर। मन-मधु - मन रूपी भंवरा। **विश्वस्त-** विश्वसनीय। **प्रमुदित-** खुश। **चरण-अरविन्द**-चरण-कमल।

**प्रसंगः** प्रस्तुत अवतरण प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता 'याचना' में से अवतरित किया गया है। यहाँ कवि प्रार्थना करता है कि विकट परिस्थितियों में भी हमारी ईश्वर में आस्था बनी रहे।

**व्याख्या :** कवि ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहता है कि जब हमारे प्रिय जन और सच्चे मित्र भी हमारा साथ छोड़ दें और हमारे घावों पर नमक छिड़कें अर्थात हमारे कष्टों और दु:खों को पहले से भी अधिक बढ़ा दें या दु:ख स्वयं साकार रूप में आकर हमारे सामने ही क्यों न खड़ा हो जाये। हे करुणा के सागर ! हम जीवन में दु:खी हों अथवा आनन्द मंगल जीवन व्यतीत कर रहे हों, पर हमारा मन रूपी भंवरा

आपके चरण रूपी कमलों में विश्वास रखता हुआ लीन होकर प्रसन्न रहे।

भावार्थ : हमें दु:ख में और सुख में समान भाव से ईश्वर को स्मरण करना चाहिए।

विशेष :- क. कवि का आशावादी दृष्टिकोण है।
ख. 'मन-मधुप' तथा 'चरण अरविन्द' में रूपक अलंकार है।
ग. संस्कृतनिष्ठ हिंदी भाषा का प्रयोग किया गया है।
घ. शब्द चयन उचित एवं भावों के अनुकूल है।
ङ शांत रस।

हम हों, सुमन की सेज पर या कण्टकों की बाड़ में,
पर प्राणधन ! तुम छिपे रहना इस हृदय की आड़ में,
हम हों कहीं इस लोक में, उस लोक में, भू-लोक में!
तब प्रेम-पथ में ही चलें, हे नाथ! तब आलोक में!

शब्दार्थ : सुमन-फूल। कण्टकों-काँटों। बाड़- झाड़ी।प्राणधन-ईश्वर। आड़-ओट। इस लोक -संसार। उस लोक-परलोक। **भू-लोक-**पृथ्वी लोक। **प्रेम-पथ-** प्रेम मार्ग। **आलोक-**प्रकाश।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता 'याचना' में से अवतरित किया गया है। यहाँ कवि प्रार्थना करता है कि विकट परिस्थितियों में भी हमारी ईश्वर में आस्था बनी रहे।

व्याख्या: कवि ईश्वर से प्रार्थना करता हुआ अंत में कहता है कि हम चाहे फूलों की शैय्या पर हों या काँटों की झाड़ी में अर्थात हमारा जीवन चाहे सुखद वैभवपूर्ण हो अथवा दुःखद अभावग्रस्त हो किन्तु हे प्रभु ! आप हमारे हृदय की ओट में कहीं न कहीं निवास करते रहना।

हम चाहे कहीं पर भी हों अर्थात इस लोक में, परलोक में अथवा पृथ्वी लोक में हों, बस हम तुम्हारे बताए प्रेम के रास्ते और हमेशा ज्ञान रूपी प्रकाश के मार्ग पर ही चलें।

भावार्थ : हमें दुःख में और सुख में समान भाव से ईश्वर को स्मरण करना चाहिए।

विशेष : क. कवि का आशावादी दृष्टिकोण है।

ख. संपूर्ण पद्यांश में अनुप्रास अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया गया है। पहली पंक्ति में 'स' तथा 'क' तीसरी पंक्ति में 'ह' तथा 'ल' की बार-बार आवृत्ति से विशेष रूप से अनुप्रास अलंकार द्रष्टव्य है।

ग. संस्कृतनिष्ठ हिंदी भाषा का प्रयोग किया गया है।

घ. शब्द चयन उचित एवं भावों के अनुकूल है।

ङ शांत रस।

## अभ्यास

**प्रश्न 1. 'याचना' कविता में कवि ने प्रभु से क्या वरदान मांगा है?**

उत्तर : कवि ने प्रभु से यह वरदान मांगा है कि जीवन में चाहे कितनी ही मुसीबतें आयें, दु:ख के बादल घिर आयें, अपने मित्र और प्रेमी साथ छोड़ दें अर्थात विकट से विकट परिस्थितियों में भी हमारी ईश्वर में आस्था बनी रहे।

**प्रश्न 2. प्राकृतिक आपदाओं के समय हमारी मनोदशा कैसी होनी चाहिए?**

कवि ने प्रलय, ज्वालामुखी के फटने, सागर के उमड़ने, ग्रहों के अपने केन्द्र से हटने, पर्वतों का बिजलियों के समूह के प्रहार से गिरने तथा

खाली आकाश में महानाश के बादलों के घिरने को प्राकृतिक आपदाएं कहा है। इन आपदाओं के समय कवि कहता है कि हे प्रभु ! हम आपके चरण कमलों में ही ध्यान लगाये रखें।

**प्रश्न 3. 'याचना' कविता में जयशंकर प्रसाद ने ईश्वर को किन-किन विशेषणों से अलंकृत किया है?**

उत्तर : 'याचना' कविता में कवि जयशंकर प्रसाद ने सर्वप्रथम ईश्वर के चरणों को कमल की तरह बताया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने ईश्वर को करुणानिधि, प्रेम की धारा में बहने वाला, प्रेम पथ एवं आलोक युक्त विशेषणों से अलंकृत किया है।

==========================================


**तैयारकर्ता व प्रस्तुतकर्ता**

**डॉ.सुनील बहल**

**एम.ए.(संस्कृत ,हिंदी), एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)**

**स्टेट रिसोर्स पर्सन**

**(हिंदी और पंजाबी)**


==========================================